अध्याय प्रथम

शोध परिचय

अध्याय- प्रथम

शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना

मनुष्य के जीवन को दिशा निर्देश करना आवश्यक है। दिशा निर्देश सही होना चाहिए। जिससे मानवीय जीवन में नियम, नैतिकता, सदाचार, लोकशाही, नागरिकता, धार्मिकता, सांस्कृतिकता आदि गुण विद्यमान हो और इन उर्पयुक्त गुणों को पाने के लिए शिक्षा आवश्यक हैं शिक्षा के बिना मानवी का जीवन व्यर्थ है।

शिक्षा हम सबके जीवन का अनिवार्य अंग है। शिक्षा का महत्व दिनो–दिन बढ़ता ही चला जा रहा है। ''शिक्षा शब्द संस्कृत के शिक्ष् धातु से बना है। शिक्षा का अर्थ है सीखना। सीखने की प्रक्रिया शिशु के जन्म से मृत्यु तक चलती रहती है। शिक्षा आजीवन चलने वाली एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति का शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक आदि विकास सम्पर्क रीति से होता है। इसके फलस्वरूप व्यक्ति अपने आपको वातावरण से अनुकूल करके जीवन को सफल बनाता है और अपने व्यवहार में परिवर्तन तथा परिवर्धन लाता है। जिससे व्यक्ति, जाति, राष्ट्र तथा विश्व सभी का हित होता है।''

अंग्रेजी भाषा में शिक्षा के लिए एजूकेशन (Education) शब्द को प्रयोग किया जाता है। व्युत्पति की दृष्टि से अंग्रेजी भाषा एजुकेशन (Education) शब्द लैटिन भाषा के एजूकेटम (Educatum) शब्द से बना है। लैटिन भाषा का एजूकेटम (Educatum) शब्द दो शब्द E तथा Duco से मिलकर बनाया गया है।

शिक्षा की परिभाषाएँ

''सा विधा या विमुक्तये।''

– विष्णु पुराण

"जो बालक एवं व्यक्ति के

शरीर, आत्मा एवं मन का

सर्वोत्कृष्ट विकास कर सके।"

–गांधीजी

"शिक्षा कहती है कि विज्ञान नहीं, सत्ता की दासी नहीं, किसी शास्त्र की गुलाम नहीं अपितु मैं मानव के हृदय, बुद्धि और अन्य समग्र शक्तियों की स्वामिनी हूँ। मानवशास्त्र और समाजशास्त्र मेरे दो चरण है कला और मेरे हुन्नर मेरे हाथ है। विज्ञान मेरा मस्तिष्क है, धर्म मेरा हृदय है, निरीक्षण व तर्क मेरे कान है, आजादी मेरा श्वास है, उत्साह व उद्योग मेरे फेफडे है, धैर्य मेरा व्रत है, श्रद्धा मेरी पूँजी है। मैं समग्र कामनाएं पूर्ण करने वाली जगदम्बा हूँ। सच्चे अर्थ में शिक्षा जगदम्बा है।"

– काका साहेब कालेलकर

परन्तु, शिक्षा के विकास के लिए एक उपयुक्त शिक्षक की आवश्यकता रहती है। शिक्षक वह धुरी है जिसके चारों और शैक्षिक गतिविधियाँ क्रियाशील रहती है। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली में सबसे महत्वपूर्ण स्थान शिक्षक का होता है। शाला की उन्नति अथवा विकास के लिए, उचित पाठ्यक्रम, श्रेष्ठ पाठ्यपुस्तक, उत्तम शिक्षा साधन तथा उपयुक्त शालागृहों की आवश्यकता तो है ही परंतु उससे कई ज्यादा आवश्यकता है उपयुक्त शिक्षक की। अच्छे शिक्षक के अभाव में किसी भी देश की शिक्षा पद्धति निर्जीव और निस्तेज हो जाती है। अंग्रेजों के शासन काल में अध्यापकों की स्थिति शोचनीय हो गयी थी। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सरकार द्वारा नियुक्त राधाकृष्णन आयोग (1948–49), मुधलियार कमिशन (1952–53), कोठारी कमिशन (1964–66) इन सभी ने इस बात पर बल दिया कि अध्यापकों की आर्थिक, सामाजिक और व्यावसायिक दशाओं को सुधारे बिना शिक्षक का

उत्तरदायित्व अपूर्ण ही रहेगा। देश के सारे शिक्षा शास्त्री, विद्वान राजनीतिज्ञ और प्रशासक यह स्वीकार करते है कि देश जिस संकट कालीन दौर से गुजर रहा है उसमें अध्यापक ही उसे बल प्रदान कर सकते है।

शिक्षक के लिए यह कहना सार्थक होगा कि वह समाज का शिल्पी होता है, राष्ट्र विकास की धुरी होता है, देश के भावी कर्णधारों और उनके भविष्य का निर्माता होता है। वही समाज का राष्ट्र के मूल्यों को अक्षुण्ण बनाए रखने हेतु प्रयासरत रहता है। वह समाज का सेवक भी है जो समाज की धड़कन को पहचान कर उसे नया जीवनदान देता है। नित्य नवीन प्रेरणा भी प्रदान करता है। शिक्षक में ऐसी अनूठी एवं अलौकिक शक्ति है, जिसके बल पर वह छात्रों में शीर्षस्थ सद्गुणों का बीजारोपण कर उसका प्रारब्ध तक बदल सकता है।

"गुकारश्वान्धकारश्च गुलारस्तन्नराधकृत।
अंधकार विनाशत्पाद गुरू रित्यक्षरदृयम।।"

अर्थात शिक्षक को अज्ञान के अंधकार को दूर कर सद्गुणों को जागृत करने वाला, आशा का संचार करने वाला माना गया है।

व्यवसाय के प्रकार

क्र.	व्यवसायिक परिवार	व्यवसाय के प्रकार
1.	कृषि कामदार	किसान, डैरी मजदूर, फोरेस्ट रेंजर।
2.	एथलेटीक	एथलेटीक कोच, खेल शिक्षक, निर्देशक–शारीरिक शिक्षा शिक्षक।
3.	कलात्मक	अभिनेता, संगीत शिक्षक
4.	कारकून	बैंक कारकून, ऑफिस कारकून।
5.	साहित्य	लेखक, आलोचक, संपादक, पत्रकार
6.	वैज्ञानिक	जीव वैज्ञानिक, रसायण शास्त्री
7.	सामाजिक सेवा	सामाजिक कार्यकर्ता, शाला परामर्शदाता, शिक्षक
8.	मेकेनिकल	अभियन्ता, टूलमेकर

शिक्षक और अध्यापन व्यवसाय

शिक्षा में शिक्षक एवं अध्यापन व्यवसाय एक सिक्के के दो पहलू है। जिनको अलग करना असंभव है। अध्यापन का अर्थ होता है छात्रों को कुछ विशिष्ट विषयों का ज्ञान प्रदान करना। शिक्षा में वस्तुतः हम इस ज्ञान को सम्मिलित कर लेते है, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है शिक्षा एक त्रिध्रुवी प्रक्रिया है उसके मुख्य तीन घटक होते है अध्यापक–पाठ्यक्रम–छात्र। शिक्षा में शैक्षिक क्रियाएँ जो पाठ्यक्रम से संबंधित होती है तथा सह शैक्षिक क्रियाएँ जो छात्रों और अध्यापकों के अनुभव विश्व तथा व्यक्तित्व घटकों से संबंधित होती है। शिक्षा बालकों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने के लिए अद्भुत भूमिका निर्वाह करती है। अध्यापकों को सदा केवल विषयों के अध्यापन तक ही सीमित न रहकर बालकों के सर्वांगीण विकास में अपना योगदान देने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

शिक्षक राष्ट्र का हितैषी है, छात्रों के उन्नयन के लिए सदैव प्रयत्नशील भी रहता है। बस आवश्यकता है तो छात्रों से प्रेम करने की, उनके साथ समय बिताने की, छात्रों के साथ कार्य करने की, आवश्यकतानुसार समस्या समाधान करने की, स्वयं के चरित्र से छात्रों के चरित्र को उबारने की जब तक्षशीला का एक गुरू, सैनिक को राजा बना सकता है, संपूर्ण देश को धन संपन्न बना सकता है, तो शिक्षक भावी पीढ़ी के उत्थान और राष्ट्र निर्माण के लिए चाणक्य की सी शक्ति को क्यो नहीं धारण कर सकते है?

"शिक्षक कभी साधारण नहीं होता प्रलय और निर्माण उसकी गोद में पलते है।"

–चाणक्य

राष्ट्र की उन्नति में स्थान

जोन डी. वी. के अनुसार "शिक्षक सदैव देवता का पैगम्बर होता है। समाज सुधारक एवं समाज सेवक के रूप में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। वह विद्यालय में ऐसा सामाजिक वातावरण निर्मित करता है, मित्र व पथ-प्रदर्शक के रूप में वह ऐसे अवसर प्रदान करता है, जिससे छात्र भाषा, धर्म, रंग, संप्रदाय, जाति अवस्थाएँ और अन्य संकिर्णताओं से ऊपर उठकर सही अर्थ में शिक्षा के मुख्य लक्ष्य "व्यक्ति को इन्सान बनाना' की प्राप्ति हेतु सक्रिय हो।"

अध्यापक का राष्ट्र की प्रगति में महत्वपूर्ण स्थान है कहा भी जाता है कि एक आदमी हत्या करके एक जीवन का अंत करता है किन्तु शिक्षक गलत शिक्षा देकर संपूर्ण परिवार की हत्या करते है तथा संपूर्ण परिवार की हत्या करते है तथा संपूर्ण राष्ट्र का अहित करते है। इसीलिए शिक्षक का परम कर्तव्य ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करता है जो राष्ट्र की प्रगति के आधार बन सके।"

संस्कृति का पोषक

गारफोर्थ के अनुसार "शिक्षक के माध्यम से ही संस्कृति पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होती है, समाज की परम्पराएँ नवयुवकों को ज्ञात होती है तथा वह नई एवं रचनात्मक उत्तरदायित्व पूर्ण ऊर्जाए छात्रों की सौंपता है।" कबीर साहब ने भी गुरू की महिमा बताते हुए लिखा है कि

"गुरू-गोविन्द दोऊ खडे काके लागु पाय।

बलिहारी गुरू आपनी जिन गोविन्द दियो बताय।

आदर्शवाद के अनुसार शिक्षक

शिक्षक का स्थान शिक्षण- प्रक्रिया में सर्वोपरी है।

"विद्यालय वाटिका है, छात्र कोमल पौधा है और शिक्षक माली है। जिस प्रकार माली पौधों के उत्तम विकास के लिए उपयुक्त वातावरण प्रदान करता है, उसी प्रकार अध्यापक विद्यालय में उपयुक्त वातावरण प्रदान करके छात्रों की संकल्प शक्ति एवं व्यक्तित्व के विकास के लिए प्रयत्न करता है।"

प्राचीन भारत में तो शिक्षक ईश्वर का ही एक स्वरूप माना जाता था। उसको त्रिदेव की संज्ञा देते हुए लिखा है-

"गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुदेवो महेश्वराः।
गुरुः साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।

शिक्षक के विषय में शिक्षाविदों के विचार

डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार :- शिक्षक राष्ट्र के भाग्य के मागदर्शक है। शिक्षक बौद्धिक परम्पराओं तथा तकनीकी कौशलों को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरण करने में धुरी का कार्य करता हैं। वह सभ्यता एवं संस्कृति का संरक्षण तथा परिमार्जनकर्ता है। वह बालक का ही मार्गदर्शन नहीं वरन संपूर्ण राष्ट्र का मार्गदर्शक है।

रविन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार :- शिक्षक वह प्रकाश पुंज है जो स्वयं जलकर औरों को प्रकाशित करता है।

डॉ. जाकिर हुसैन के अनुसार :- वास्तव में शिक्षक हमारे भाग्य-निर्माता है समाज अपने विनाश पर उनकी अपेक्षा कर सकता है।

प्रो. हुमायुं कबीर के अनुसार :- शिक्षक राष्ट्र के भाग्य निर्णायक होते है। वे ही पुनः निर्माण की कुंजी है।

शिक्षक का राष्ट्र की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान है। कहाँ जाता है कि एक व्यक्ति हत्या करके एक जीवन का अंत करता है किन्तु शिक्षक गलत शिक्षा देकर संपूर्ण परिवार की हत्या करता हैं तथा संपूर्ण राष्ट्र का अहित कर सकता है।

शिक्षकों के लिए विचार

कोठारी कमिशन के अध्यक्ष डी.एस. कोठारी ने शिक्षकों की स्थिति में सुधार करने के लिये कुछ विचार व्यक्त किये थे उनमे से कुछ निम्नलिखित है।

- भारत सरकार द्वारा विद्यालयों के शिक्षकों के न्यूनतम वेतन क्रम निश्चित किए जाने और राज्यों तथा केन्द्र शासित प्रदेशों को अपनी परिस्थितियों के अनुकूल समान और उच्च वेतनमान स्वीकार करने में सहायता करनी चाहिए।
- सरकारी और गैर–सरकारी दोनों प्रकार के विद्यालयों के शिक्षकों के वेतन क्रमों में समानता के सिद्धांत का पालन किया जाना चाहिए।
- शिक्षा संस्थाओं में शिक्षकों को कुशलता पूर्वक कार्य करने के लिए न्यूनतम सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए।
- शिक्षकों की अपनी व्यवसायिक उन्नति करने के लिए उपयुक्त सुविधाएँ प्रदान की जानी चाहिए।
- शिक्षको के लिए सरकारी गृह निर्माण योजनाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- शिक्षको के सभी नागरिक अधिकारों का उपयोग करने की स्वतंत्रता दी जानी चाहिए।
- शिक्षकों में प्रचलित व्यक्तिगत ट्यूशनों की प्रथा को नियंत्रित किया जाना चाहिए।

शिक्षकों की वर्तमान अवस्था

शिक्षा प्रगतिशील राष्ट्र की रीढ़ है और शिक्षक शिक्षा पद्धति में प्रशंसनीय है। राष्ट्र की प्रगति उसके शिक्षकों की योग्यता पर निर्भर होती है। अध्यापन व्यवसाय सभी व्यवसायों में उत्तम है। परन्तु भाग्य की विडम्बना है कि अध्यापन एक बहुत ही अनाकर्षक व्यवसाय बनता जा रहा है। और माध्यमिक-प्राथमिक शिक्षक समाज में सम्माननीय स्थिति नहीं रखता। भारत में आज भी शिक्षक आर्थिक दृष्टि से निर्धन है। सामाजिक दृष्टि से उसका स्तर निम्न है व्यवसायिक दृष्टि से शिक्षक का कार्य कठोर परिश्रम करने का है।

व्यवसायिक स्थिति

अध्यापन व्यवसाय अध्यापक के लिए किसी प्रकार का आकर्षण नहीं रखता क्योंकि कुछ दिनों की नौकरी के पश्चात् शिक्षक देखता है कि उसे प्रगति करने के अवसर नहीं मिल रहे, उसका कार्यभार असाधारण रूप से अधिक है। सेवा शर्ते दयनीय है और संस्थापकों की और उसे किसी प्रकार का प्रोत्साहन नहीं है। जिससे शिक्षकों को अत्याधिक मानसिक तनाव सहन करना पड़ता हैं। शिक्षकों को सप्ताह में 40 से 50 घंटे शाला में कार्य करना होता है। शाला में अनुशासन बनाए रखना होता है और भी अनेक कर्तव्य निभाने की आशा शिक्षक से की जाती है। उन्हें सह पाठ्यक्रम क्रियाओं को क्रियान्वित भी करना होता है। अनुचित रूप से सेवामुक्ति, वेतन मिलने में देरी, पदोन्नति नहीं होना, छुट्टियाँ अस्वीकृत होना इत्यादि कारणों से शिक्षक का मानसिक स्वास्थ्य विनष्ठ हो जाता है। कभी-कभी पदोन्नति के कागजात अनेक वर्षो तक वैसे ही विचाराधीन पडे रहते है, वह उच्च अधिकारियों तक नहीं पहुंचते तथा शिक्षक की रिपोर्ट जानबूझकर खराब कर दी जाती है। वर्तमान समय मं सम्माननीय व्यवसाय अपमानजनक टिप्पणियाँ प्राप्त कर रहा है।

सामाजिक स्थिति

प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षक की समाज में स्थिति इतनी निम्न है कि उसे योग्य सामाजिक स्वीकृति नहीं मिल पाती। एक ही परिवार के दो भाईयों में एक डॉक्टर तथा दूसरा शिक्षक हो तो शिक्षक की तुलना में डॉक्टर को अधिक सम्मान दिया जाता है।

वर्तमान समय में व्यक्ति अपनी आमदनी से जाना जा रहा है और आदर सम्मान प्राप्त कर रहा है शिक्षक के योगदान को समाज में उपेक्षा से देखा जाता है।

आर्थिक स्थिति

माध्यमिक शाला शिक्षकों का आर्थिक स्तर संतोष जनक नहीं है। इनका आरंभिक वेतन काफी कम है। वर्तमान समय में कई सालों तक शिक्षकों को मुक्त में सेवा देना पडती हैं तब जाके इनको नियुक्त किया जाता है। यह शिक्षकों के लिए दयनीय स्थिति है।

1.2 समस्या कथन

उर्पयुक्त तथ्यों को आधार मानकर शोधकर्ता ने "माध्यमिक शाला के शिक्षकों की शैक्षिक परिपक्वता एवं व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन" इस विषय को लघुशोध प्रबंध हेतु चुना है।

1.3 समस्था कथन में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा एवं व्याख्या

शैक्षिक परिपक्वता

परिपक्वता शब्द पूर्णता को दर्शाता है। यहां पर परिपक्वता अर्थ एक शिक्षक अपने व्यवसाय के क्षेत्र में कहाँ तक पूर्ण है। जैसे बढ़ई, अपने क्षेत्र में परिपक्व होता है। इसी प्रकार शिक्षक शिक्षण कार्य में परिपक्व होना चाहिए अर्थात शिक्षकों शैक्षिक पूर्णता। अपने जीवन-भर के अनुभव, कार्य

करने का ढंग, शिक्षक को मिलता मान–सम्मान, विद्यार्थी जीवन निर्माण में शिक्षक का योगदान, आदि एक पूर्ण शिक्षक से मिलता है।

उर्पयुक्त, सभी बाते शिक्षक को मिले प्रशिक्षण के कारण सम्भव है। प्रभावशील प्रशिक्षण कार्य है। एक शिक्षक को पूर्ण बना सकता है। एवं शिक्षक को कार्य करने के प्रति रहने वाली हिम्मत, प्रोत्साहन, से ही एक शिक्षक परिपक्व होता है।

व्यवसायिक संतुष्टि

इसमें दो शब्द प्रयुक्त है, व्यवसाय और संतुष्टि। व्यवसाय से हमारा तात्पर्य किसी कार्य विशेष से है। व्यक्ति जिस कार्य में संलग्न रहकर अपने जीविकोपार्जन के लिए धन प्राप्त करता है वहीं उसका व्यवसाय है।

संतुष्टि एक व्यापक शब्द है जिसका अर्थ ही विवादास्पद है। भारतीय दार्शनिकों के अनुसार परित्याग ही संतोष है। अर्थात् इच्छा रहित अवस्था ही संतोष की अवस्था है। परन्तु यह चरम स्थिति सामान्य व्यक्ति को प्राप्त नहीं है। समाज में विरले ही इस स्थिति को प्राप्त करते हैं। इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए चिंतन, मनन एवं त्याग की भावना की आवश्यकता होती है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से हम संतुष्टि का आवश्यकताओं के संबंध में ही अध्ययन करते है। मनुष्य की आवश्यकताओं का वर्गीकरण मेस्लो महोदय के अनुसार पांच अवस्थाओं में किया गया है।

1. मूल शारीरिक आवश्यकताएँ,
2. सुरक्षा एवं बचाव
3. प्रेम एवं सामाजिकता
4. आत्मसम्मान की भावना
5. आत्मानुभूति।

हर व्यक्ति अपने व्यवसाय से इन आवश्यकताओं की पूर्ति चाहता है इसीलिए वह व्यवसाय से संलग्न रहकर परिश्रम एवं कार्य करता है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति यदि किसी व्यवसाय से होती है तो उससे संलग्न कर्मचारियों को व्यवसायिक संतोष होगा। यदि उन कर्मचारियों की मूल आवश्यकताओं की पूर्ति उक्त व्यवसाय से नहीं होती तो उससे संलग्न व्यक्तियों को व्यवसायिक संतोष नहीं होगा।

प्रस्तुत अनुसंधान में माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यवसायिक संतुष्टि का उपरोक्त मनोवैज्ञानिक अर्थ विशेष रूप से स्वीकार किया जाता है। यहाँ एक बात ध्यान रखने योग्य है कि विकास एवं परिपक्वता के साथ–साथि मनुष्य की आवश्यकताएँ भी विस्तृत एवं परिवर्तित होती रहती है। इसलिए व्यवसायिक संतुष्टि के लिए यह भी आवश्यक है कि विकास अनुसार परिवर्तन एवं विस्तृत आवश्यकताओं की पूर्ति करने की क्षमता भी व्यवसाय में सन्निहित हो।

1.4 शोध कार्य के उद्देश्य

माध्यमिक शालाओं में कार्यरत शिक्षकों की शैक्षिक परिपक्वता एवं व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य संबंधों का अध्ययन करना।

माध्यमिक शालाओं में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शैक्षिक परिपक्वता का अध्ययन करना।

ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक शालाओं के शिक्षकों की शैक्षिक परिपक्वता का अध्ययन करना।

माध्यमिक शालाओं में कार्यरत शैक्षिक अनुभवी (5 साल से ज्यादा) एवं आंशिक शैक्षिक अनुभवी (5 साल से कम) शिक्षकों की शैक्षिक परिपक्वता का अध्ययन करना।

माध्यमिक शालाओं में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं को व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन करना।

ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक शालाओं में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन करना।

माध्यमिक शालाओं में कार्यरत शैक्षिक अनुभवी (5 साल से ज्यादा) एवं आंशिक शैक्षिक अनुभवी (5 साल से कम) शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन करना।

1.5 शोध समस्या की परिसीमाएँ

शोध के लिए सीमांकन आवश्यक है। क्योंकि समग्र जनसंख्या को शोध के लिए नहीं लिया जा सकता। इसीलिए जो न्यादर्श समग्र जनसंख्या का प्रतिनिधित्व कर सके ऐसे होने चाहिए। अतः प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने निम्नलिखित सीमित न्यादर्श चयन किया है।

प्रस्तुत अध्ययन के लिए गुजरात राज्य के दाहोद जिले का चयन किया गया।

दाहोद जिले के दो तहसील झालोद एवं दाहोद के न्यादर्श चयन किये गये।

4 शालाएँ शहरी एवं 6 शालाएँ ग्राम्य ली गई।

दाहोद जिले में से 50 शहरी शिक्षक एवं 50 ग्राम्य शिक्षकों तक ही अध्ययन सीमित रखा गया।

1.6 शोध परिकल्पनाएँ

माध्यमिक शालाओं में कार्यरत शिक्षकों की शैक्षिक परिपक्वता एवं व्यवसायिक संतुष्टि के मध्य कोई संबंध नहीं होगा।

माध्यमिक शालाओं में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की शैक्षिक परिपक्वता के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक शालाओं के शिक्षकों की शैक्षिक परिपक्वता के मध्य सार्थक अंतर नहीं होगा।

माध्यमिक शालाओं में कार्यरत शैक्षिक अनुभवी (5 साल से ज्यादा) एवं आंशिक शैक्षिक अनुभवी (5 साल से कम) शिक्षकों की शैक्षिक परिपक्वता के मध्य सार्थक अंतर नहीं होगा।

माध्यमिक शालाओं में कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य सार्थक अंतर नहीं होगा।

ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक शालाओं में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य सार्थक अंतर नहीं होगा।

माध्यमिक शालाओं में कार्यरत शैक्षिक अनुभवी (5 साल से ज्यादा) एवं आंशिक शैक्षिक अनुभवी (5 साल से कम) शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य सार्थक अंतर नहीं होगा।

1.7 शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

शिक्षा जगत में अभ्यासक्रम– विद्यार्थी के साथ–साथ शिक्षक महत्वपूर्ण घटक है। वर्तमान समय में शिक्षक शैक्षिक कार्यो के अलावा अन्य कार्यो के बोझ में दबा रहता है। शिक्षक के विषय में ऐसा कहा जाता है कि जब किसी व्यक्ति को अन्य व्यवसाय की प्राप्ति नहीं होती तब व्यक्ति शिक्षक का व्यवसाय अपनाता है। वह पूर्ण रूप से शिक्षक बनने के लिए तैयार नहीं रहता फिर भी शिक्षक बनना पडता है। और एक अच्छे शिक्षक की भूमिका निभानी पडती है।

ऐसे समय में शिक्षक अपने आप में कितना परिपक्व है, अकादमिक, शैक्षिक परिपक्वता यह जानना जरूरी है।

साथ ही एक शिक्षक को अपने व्यवसाय के प्रति कितना लगाव है। वह अपने कार्य के साथ, भुगतान के साथ, पदोन्नति से, संस्थान की कार्य पद्धति से, शाला–व्यवस्थापन से कितना संतुष्ट है यह जानना अति आवश्यक है।